मुजरा हमारा आखरी अब लीजिए नबी (स0)
वक्ते दुआ ये है की दुआ कीजिए नबी (स0)

पानी न पाऊंवां तो न घबराऊं प्यास से
खंजर के नीचे सब्र करूं वक्ते ज़िबह के

नाला बुलंद जब हुआ ज़ोहरा (रज़ी0) के माह का
इक शोर उठा लहद में मोहम्मद (स0) की आह का

नाना से जब हुसैन (रज़ी0) को रुखसत हुई अता
ज़ेहरा (रज़ी0) की क़ब्र पर गए फिर शाहे करबला

रुखसत तलब जो मां से किए बेकरार हो
लर्ज़ा हुआ लहद को गश आया हुसैन (रज़ी0) को

ज़हरा (रज़ी0) की यूं सदा हुई लख्ते जिगर मेरे
तुम क्या चले की हम भी हैं हमराह आपके

रोज़े पे फिर हसन के गए शाहे दो जहां

शहादत नामा
रोकर कहा की छोड़ते हैं हम मदीना को
ऐ भाई जान भाई को रुखसत अता करो
इक इश्क़ छोटे भाई से हज़रत हसन (रज़ी०) को था
रुखसत का नाम सुनके कल्क रूह को हुआ
आवाज़ दी की साथ तुम्हारे नबी (स०) भी हैं
हम भी हैं साथ अम्मां भी हैं और अली (रज़ी०) भी हैं
फिर आए सब कुरेशो मुहाजिर सूए हुसैन (रज़ी०)
इक इक मदीने वाले से रुखसत हुए हुसैन (रज़ी०)
फरमाया फिर बहन को की सब घर को साथ लो
सुगरा बुखार (रज़ी०) में है यहीं उसको छोड़ दो
बेटी को ले न चलने की जिस दम खबर हुई
रोती हुई हुसैन (रज़ी०) के क़दमों में गिर पड़ी
की अर्ज़ मेरी बहन है अब साथ आपके
लौंडी को भी मदीना में तन्हा न छोड़िए

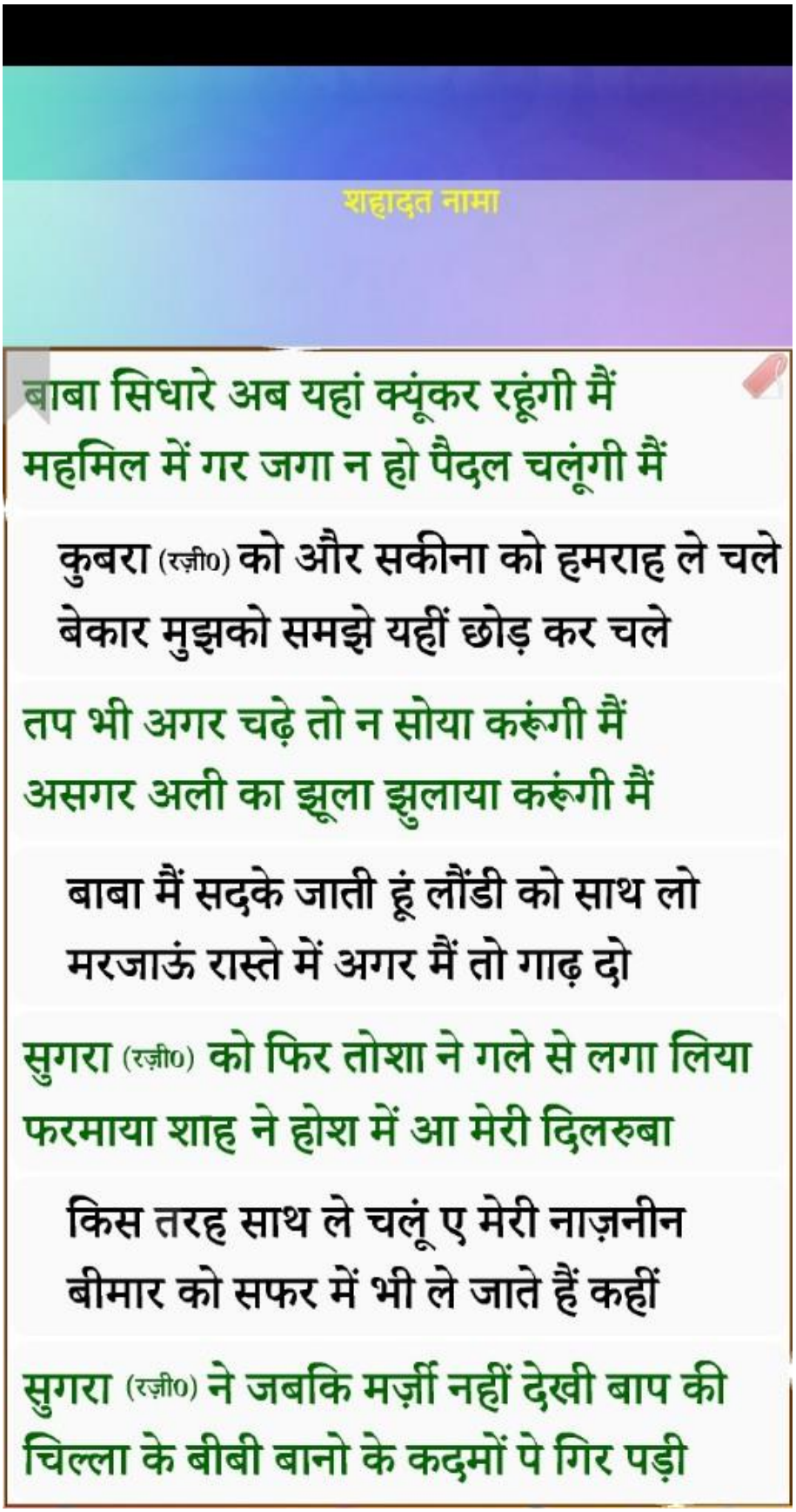
शहादत नामा
बाबा सिधारे अब यहां क्यूंकर रहूंगी मैं
महमिल में गर जगा न हो पैदल चलूंगी मैं
कुबरा (रज़ी०) को और सकीना को हमराह ले चले
बेकार मुझको समझे यहीं छोड़ कर चले
तप भी अगर चढ़े तो न सोया करूंगी मैं
असगर अली का झूला झुलाया करूंगी मैं
बाबा मैं सदके जाती हूं लौंडी को साथ लो
मरजाऊं रास्ते में अगर मैं तो गाढ़ दो
सुगरा (रज़ी०) को फिर तोशा ने गले से लगा लिया
फरमाया शाह ने होश में आ मेरी दिलरुबा
किस तरह साथ ले चलूं ए मेरी नाज़नीन
बीमार को सफर में भी ले जाते हैं कहीं
सुगरा (रज़ी०) ने जबकि मर्ज़ी नहीं देखी बाप की
चिल्ला के बीबी बानो के कदमों पे गिर पड़ी

शहादत नामा
बिस्मिल्ला-हिर्रहमा-निर्रहीम
बज़मे जहां में धूम है मातम के शीन की
यारो ये गम फिज़ा है शहादत हुसैन (रज़ी०) की
क्या समझे कोई मोमिनो रुतबा हुसैन (रज़ी०) का
फरमाते हर घड़ी थे ये मेहबूबे किबरिया
लखते जिगर हुसैन (रज़ी०) व हसन (रज़ी०) नूरे ऐन हैं
है निस्फ तन हसन (रज़ी०) मेरा बाक़ी हुसैन (रज़ी०) है
सुनते थे कोई बच्चे के रोने की जब सदा
बेचैन हो के कहते थे सालारे अंबिया
चिल्ला के रो रहा है कोई तिफले नाज़नीन
लो साहिबो ख़बर के हुसैना न हों कहीं
रातों को उठ के जोश में मेहबूबे कर्दगार
फिरते थे गिर्द खानए ज़ेहरा के बार बार

शहादत नामा
आवाज़ सुनते थे जो नवासों के रोने की
फरमाते थे पुकार के ज़ेहरा (रज़ी0) से यूं नबी (स0)
बेदार हो के नींद से रोता है ज़ार ज़ार
समझाओ ताकी जल्द हो दिल को मेरे क़रार
ज़िंदा थे जब जहां में शहनशाहे ज़ी हसब
करते थे ईद माहे मोहर्रम में सब अरब
सुनने का माजरा हे दिन आया जो ईद का
हज़रत से जा के दोनों नवासों ने यूं कहा
छोटे बड़े मदीने के पहने हैं सब लिबास
नाना फटे पुराने हैं कपड़े हमारे पास
एहले कुरैश कपड़े पहन करके आऐंगे
मारे हया के हम तो न मस्जिद में जाएंगे
आजुर्दा देख दोनों को शह को क्लक् हुआ
दरगाहे किबरिया में नबी (स0) ने यह की दुआ

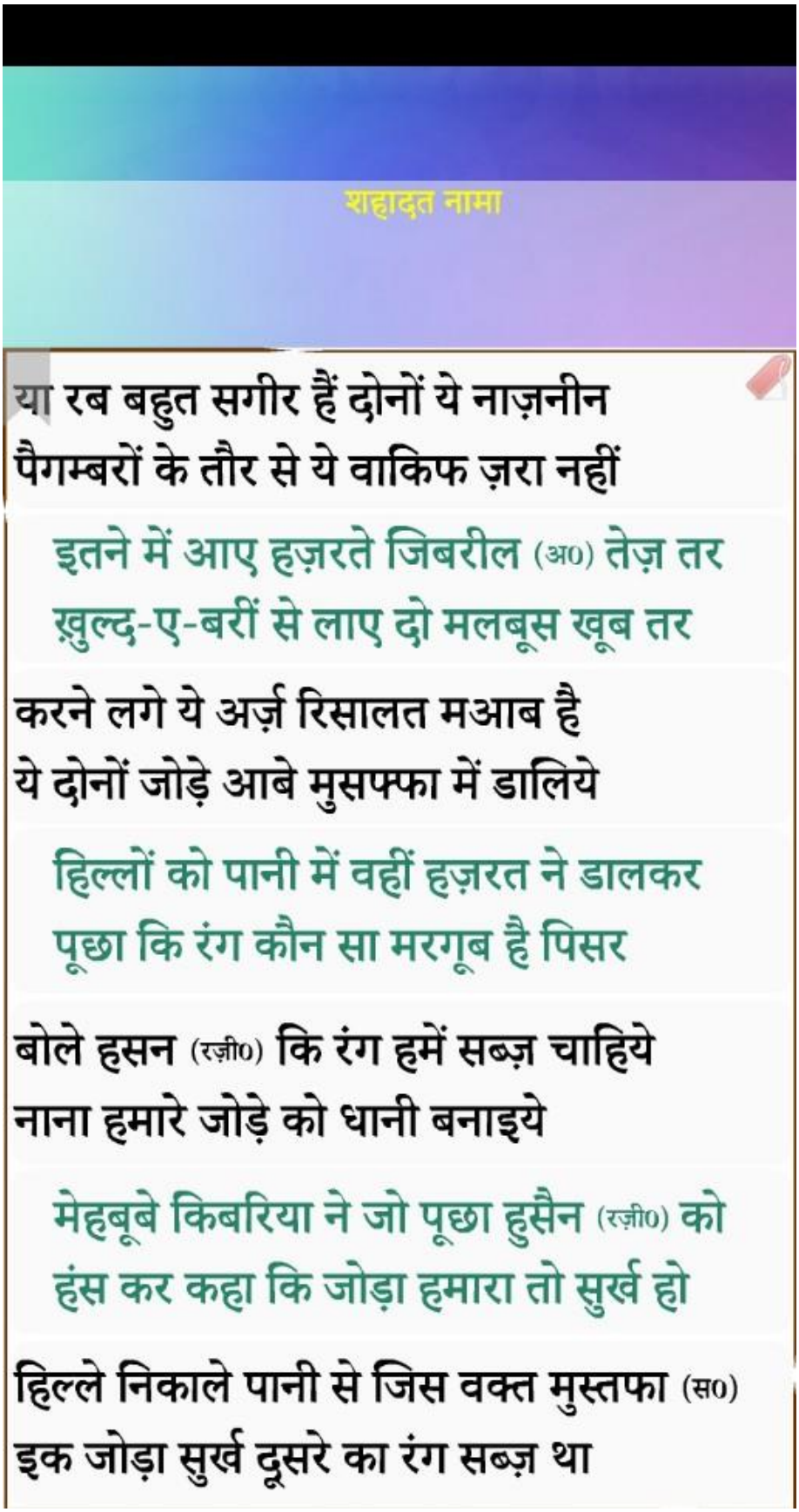
शहादत नामा
या रब बहुत सगीर हैं दोनों ये नाज़नीन
पैगम्बरों के तौर से ये वाकिफ ज़रा नहीं
इतने में आए हज़रते जिबरील (अ0) तेज़ तर
ख़ुल्द-ए-बरीं से लाए दो मलबूस खूब तर
करने लगे ये अर्ज़ रिसालत मआब है
ये दोनों जोड़े आबे मुसफ्फा में डालिये
हिल्लों को पानी में वहीं हज़रत ने डालकर
पूछा कि रंग कौन सा मरगूब है पिसर
बोले हसन (रज़ी0) कि रंग हमें सब्ज़ चाहिये
नाना हमारे जोड़े को धानी बनाइये
मेहबूबे किबरिया ने जो पूछा हुसैन (रज़ी0) को
हंस कर कहा कि जोड़ा हमारा तो सुर्ख हो
हिल्ले निकाले पानी से जिस वक्त मुस्तफा (स0)
इक जोड़ा सुर्ख दूसरे का रंग सब्ज़ था

जब दोनों शाहज़ादे वो जोड़े पहन चुके
आंखों से जिब्राईल (अ0) को आंसू रवां हुए

हज़रत (स0) ने पूछा रोते हो भाई क्यों इस क़दर
जिब्राईल (अ0) अर्ज़ करने लगे हाथ जोड़ कर

जोड़ा पसंद जिसने किया सब्ज़ रंग का
अलमास पीके रंग जुमर्रद सा होवे गा

चाहा जो सुर्ख जोड़े को हज़रत हुसैन (रज़ी0) ने
ये क़त्ल होके खून में अपने नहाएंगे

सुलताने दो जहां हुए सुनके ये बेकरार
उम्मत जो याद आई किया सब्र इख्तियार

ये अर्ज़ फिर हुसैन (रज़ी0) ने की हो के चश्म तर
अहले मदीना जाते हैं ऊंटों पे बैठकर

हम को भी कोई नाका मिले आज नाना जान
ये सुन के आप उठे शहनशाहे दो जहां

फरमाया इतना किसलिये खातिर मलूल है
नाक़ा तुम्हारे वास्ते हाज़िर रसूल (स०) है

ये कहके उनको दोश पे अपने बिठा लिये
हंसते हुए मकान से बाहर निकल चले

फिर राह में नवासों ने ये पूछा नाना जान
पकड़ी हैं सब सवारों ने ऊंटों की रेसमान

फरमाया फिर नबी (स०) ने की अफसूर्दा दिल न हो
ए नूरे ऐन ज़ुल्फें पयंबर (स०) की थाम लो

फिर चलते चलते दोनों ने हज़रत से यूं कहा
लोगों के ऊंट बोलते चलते हैं मुस्तफा (स०)

जब दोनों शहज़ादों की मर्ज़ी को पागए
अफ अफ फिर अपने मुंह से मोहम्मद पुकार उठे

हैरत हुई सहाबा (रज़ी०) को ये हाल देख कर
फरमाया मुस्तफा ने फिर आंखों में अश्क भर

ये दोनों हैं अज़ीज़ मुझे जान से सिवा
बेटों को अपने इनपे मैं कुर्बान कर दिया

कर परवरिश ये दोनों को इस नाज़ो प्यार से
राहे खुदा में दे दिया उम्मत के वास्ते

जो इनका दोस्त है वो हमारा हबीब है
दुश्मन जो इनका है वो जहन्नुम नसीब है

अब सामईन पे खुल गया रुतबा हुसैन (रज़ी०) का
दिल से सुनो है आगे शहादत का माजरा

जब मुस्तफा (स०) का हो गया अल्लाह से विसाल
फुरकत में बाप के किया ज़हरा (रज़ी०) ने इंतकाल

मारा अली (रज़ी०) को सजदे में तलवार से पलीद
अलमास पी के हो गए हज़रत हसन (रज़ी०) शहीद

चारों को जब ज़मींन के अंदर सुला चुके
तन्हाई अपनी देख कर शब्बीर (रज़ी०) रो दिये

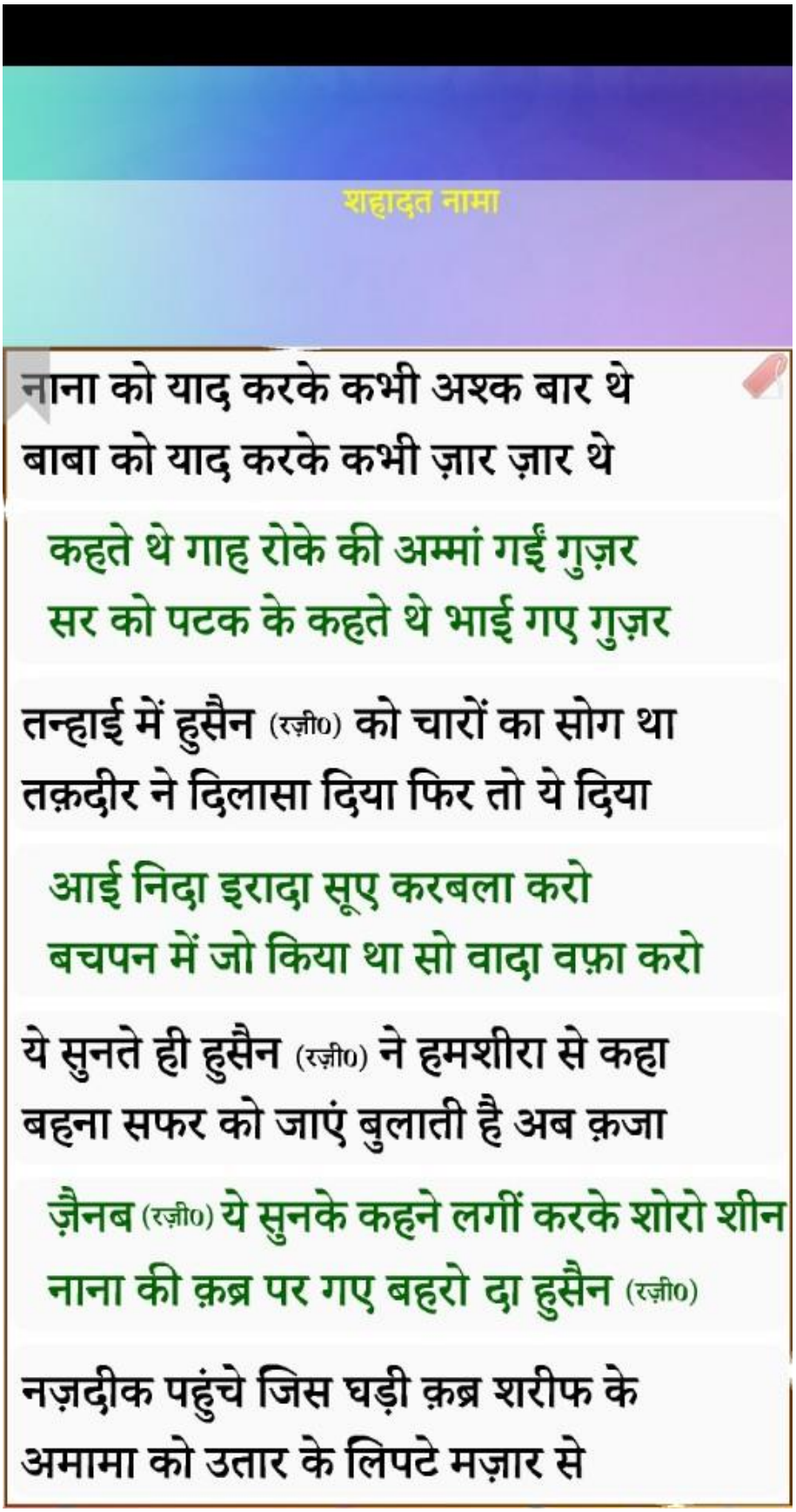
शहादत नामा
नाना को याद करके कभी अश्क बार थे
बाबा को याद करके कभी ज़ार ज़ार थे
कहते थे गाह रोके की अम्मां गईं गुज़र
सर को पटक के कहते थे भाई गए गुज़र
तन्हाई में हुसैन (रज़ी०) को चारों का सोग था
तक़दीर ने दिलासा दिया फिर तो ये दिया
आई निदा इरादा सूए करबला करो
बचपन में जो किया था सो वादा वफ़ा करो
ये सुनते ही हुसैन (रज़ी०) ने हमशीरा से कहा
बहना सफर को जाएं बुलाती है अब क़जा
ज़ैनब (रज़ी०) ये सुनके कहने लगीं करके शोरो शीन
नाना की क़ब्र पर गए बहरो दा हुसैन (रज़ी०)
नज़दीक पहुंचे जिस घड़ी क़ब्र शरीफ के
अमामा को उतार के लिपटे मज़ार से

मां का भी सीना बेटी के रोने से फट गया
बेटी को फिर बुला के गले से लगा लिया

सुगरा (रज़ी०) पछाड़ खा के गिरी फिर ज़मीन पर
मां बाप के बिछड़ने का सदमा था सख़्त तर

सुगरा (रज़ी०) को फरते गम से बस आलम था नज़ा का
मक्का की सिम्त सरवरे आलम रवां हुआ

आंखों में मिस्ले ख़ार खटकता था हर दयार
मुड़ मुड़ के देखता था मदीने को बार बार

मक्का का जब तवाफ़ शहे दीं ने कर लिया
फिर करबला की राह ली वो सबते मुस्तफा (स०)

मंज़िल में एक शामी मुसाफ़िर मिला जवां
मुस्लिम का हाल पूछे शहंशाहे दो जहां

रो रो के अर्ज करने लगा क़ासिदे सईद
मुस्लिम (रज़ी०) मापिसर हुए तिशना दहन शहीद

शहादत नामा
सर रख के मां के क़दमों पे अकबर (रज़ी०) ने ये कहा
हम आशिके इलाह हैं मरने का खौफ़ क्या
सर को कटाना काम हमारा है अम्मां जान
घर को लुटाना काम हमारा है अम्मां जान
बाबा खड़े प्यासे हैं जंगल के दरम्यान
चारों तरफ से मार हे तीरों की अम्मां जान
फिर बीबियों से लाके मिलाई वोह दिल फिगार
सब बीबियां जुदाई से रोती थीं बार बार
ख़ूने जिगर रवां हुआ बानो की चश्म से
अकबर (रज़ी०) फिर आए रूबरू सिब्ते रसूल (स०) के
बोसा दिया रकाब को क़दमों पे सर रखा
नाचार हुक्म शाह ने फिर जंग का दिया
मैदान में पहुंचा सय्यदे आलम का लाल जब
मारा हज़ार कूफियों को एक तिशना लब

मुस्लिम (रज़ी0) का हाल सुन के शे दीं ने रो दिया
फरमाया रो के ये तो क़ज़ा का हे सामना

मरने का जिसको डर हो चला जाए अपने घर
सुन कर कई चले गए मुंह अपना मोड़कर

इस्तादा करबला में हुए ख़ेमे शाह के
हफ्तादतन हुसैन (रज़ी0) के हमराह रह गए

अंबूह थी सिपाहे यज़ीद पलीद की
हल्का में उसके घिर गया सब लश्करे नबी

घेरे थे ऐहले बैत पे आलम था प्यास का
पानी न लेने देते थे नदी से अश्किया

पानी तलब जो करते थे सुलताने दो जहां
रावी ने यूं लिखा हे के कहते थे शामियाँ

हाकिम का हुक्म ऐसा है पानी बशर पिएं
घोड़े पिएं सवार पिएं और शुतर पिएं

जो तिशनालब जहाँ मे हों सब आकार पिएं
हैवाँ पिएं परिंद पिएं जानवर पिएं

काफ़िर तलक पिएं तो न तुम मना कीजियो
एक फातिमा (रज़ी०) के लाल को पानी न दीजियो

जब जालिमों ने कर लिया बिलकुल महासरा
हुर शहीद शाह पे पहले फ़िदा हुआ

सारे रफीक़ तंग हुए उनके हाथ से
नदी पे जा के जाम शहादत का पीलिए

जब खात्मा तमाम रफीक़ों का हो गया
फिर भाई अकरबा ने किया क़स्द जंग का

क़ासिम हसन का लाल भतीजा हुसैन (रज़ी०) का
उठती हुई जवानी थी पन्द्रहवां साल था

अब जोश जंग का हुआ उस नूरे ऐन को
नर्गे में काफिरों के जो देखा हुसैन (रज़ी०) को

घोड़े से उतरा सिर रखा क़दमों पे शाह के
रोकर कहा गुलाम को रण की रज़ा मिले

फरमाए यूं भतीजे से सुलताने नेक खो
अच्छी नहीं जवानी में मरने की आरज़ू

क़ासिम (रज़ी०) की अर्ज ये थी मुझे सर कटाने दो
महशर के रोज़ बाप से शर्मिंदगी न हो

शह ने हरम में ला उसे नोशा बना दिया
बेटी से अक्द बांध के फिर रण की दी रज़ा

निकला हरम से क़ासिम (रज़ी०) नोशाह शाद हो
बख्शा के मेहर बीबी से और मां से दूध को

आ के सकीना (रज़ी०) कहने लगी उससे नागहाँ
पानी पिला दे बदले में शरबत के भाईजान

क़ासिम (रज़ी०) उसे दिलासा दे घोड़े पे हो सवार
लश्कर पे जालिमों के गिरा जा के एक बार

शहादत नामा
लाखों लईनों को तह तलवार कर दिया
अर्ज़क़ से पहलवान को भी फिन्नार कर दिया
जिस दम लबे फरात पे पहुंचा वो तिशना काम
प्यासे को मारा घेर के तीरों से अहले शाम
ज़ख्मों से चूर कर दिया उस नूरे ऐन को
घोड़े से जब गिरा तो पुकारा हुसैन (रज़ी०) को
नज़दीक पहुंचे शाह तो हालत थी नज़ा की
तस्लीम कर इशारे से जन्नत की राह ली
दूल्हा जो पाया क़ासिमे (रज़ी०) नौशा को शाहे दीं
कपड़े लहू में सुर्ख थे और लाल थी ज़मीं
फरमाया रो के दूल्हा तो जंगल में मर गया
कुबरा (रज़ी०) तो बेवा हो गई भाई किधर गया
दूल्हा गया तो रोने लगीं सारी बीबियां
बानो ने तब बढ़ा दिए दुल्हन की चूड़ियां

शहादत नामा
रुखसत ले दोनों दिलबर ज़ोहरा (रज़ी०) हुसैन (रज़ी०) से
घोड़े उठा यज़ीद के लश्कर पे जा गिरे
मारे बहुत लईनों को जब दोनों तिशना काम
बौछार तीरों की करे घबरा के अहले शाम
दोनों शहीद होके हुए खुल्द को रवां
ज़हरा (रज़ी०) ने मरहबा कहा ज़ैनब (रज़ी०) ने शादमां
अब्बास (रज़ी०) भी हुसैन (रज़ी०) की तन्हाई देख कर
रो कर पुकारे शाह को या शाहे बहरो बर
जंगल में आप अकेले हैं तीरों की मार है
मुझको भी हुक्म दीजिए सर तन पे बार है
रो कर कहा ये शर ने कमर को न तोड़िए
अब्बास (रज़ी०) भाई मुझको अकेला न छोड़िए
अब्बास (रज़ी०) बोले मुझको भी ए भाई लड़ने दो
बाबा अली (रज़ी०) से हश्र में शर्मिंदगी न हो

ख़ेमा में आप आए बसद शोकतो हशम
अब्बास (रज़ी०) के गले मिले रोते हुए हरम

सब बीबियों से मिलके जो रण को हुए रवां
बाली सकीना (रज़ी०) रोती हुई आई नागहां

सूखी ज़बा दिखा के कहा ए मेरे चचा
में तिशनगी से मरती हूं पानी तो दो पिला

अब्बास (रज़ी०) रो के बोले के या दुख्तरे इमाम
जीता फिरा तो पानी पिलाता है ये गुलाम

लटका के मशक कांधे पे रण को रवां हुए
नदी पे जा के शाम के लश्कर से यूं कहे

तुम जिसका कलमा पढ़ते हो ए क़ौमे नाबकार
सब आल उनकी प्यास के मारे हे बे क़रार

एक मशक पानी दो मुझे नदी से अश्किया
सिक्का हूं मैं हुसैन (रज़ी०) की बाली सकीना (रज़ी०) का

शहादत नामा
नदी पे आड़े आए सितमगार उस घड़ी
अब्बास (रज़ी0) ने अलम जो किया तेगे हैदरी
लश्कर में जा घुसा असदुल्लाह की तरह
भागे तमाम कूफ़ी भी रूबाह की तरह
मारे गए बहुत से बहुत भागे नाबकार
नारा किए खड़ा था वहीं शेरे किर्दगार
नदी से भर के मशक को जो निकला सूए हरम
छुप छुप के ज़ालिमों ने किया हाथ को क़लम
मशकीजा मुंह मे ले लिया बाज़ू जो गिर पड़े
कुफ्फार उनको तीरों से छलनी बना दिए
अब्बास (रज़ी0) ज़ख्मी हो गिरे जिस दम ज़मीन पर
रोते थे प्यास बीबी सकीना की याद कर
अब्बास (रज़ी0) को ये बीबी सकीना (रज़ी0) से इश्क़ था
प्यासे हुए शहीद पे पानी नहीं पिया

आई हरम मे जिस घड़ी अब्बास (रज़ी0) की ख़बर
शब्बीर (रज़ी0) रो रो कहते थे टूटी मेरी कमर

बीबी सकीना (रज़ी0) कहती थीं रो रो हर एक से
खोई चचा को आज मैं पानी के वास्ते

ऐ दोस्तां शाह ये रोने की जाए है
अर्ज़ो व समां से रोने की आवाज़ आए है

एक लख्ते दिल हुसैन (रज़ी0) का बाक़ी था रह गया
जिस रश्के मए की शक्ल थी हमशक्ले मुस्तफा (स0)

उस नौजवां का अज़म बदरूस सलाम है
सफ़हे जहां पे जिसका जवां मर्ग नाम है

असगर को प्यासा जब शह अबरार पाते थे
छाती लगा के अपना अंगूठा चुसाते थे

अकबर ने रो के अर्ज़ किया शह से या इमाम
कुर्बान सब तो हो चुके बाक़ी हे ये गुलाम

शहादत नामा
सर मेरा बारे जिस्म हे या शाहे ज़ी हसब
बच्चों कि प्यास आप की तन्हाई है गज़ब
शे ने कहा मदीने को ए लाल जाओ तुम
अट्ठारह साल की न कमाई गंवाओ तुम
है मुंतजिर बहन तेरी शादी के वास्ते
नदी पे जाके सर को न प्यारे कटाईए
अकबर (रज़ी0) को शाहे दीं से जो रुखसत मिली नहीं
ख़ेमे के दर पे मां को पुकारा वोह दिल हज़ीं
हमशक्ले मुस्तफा (स0) को बस अब ख़ूब देख लो
अम्मां में मरने जाता हूं तुम दूध बख़्श दो
ये सुन के बीबी बानो को दर्दे जिगर हुआ
सूए नजफ पुकारी दुहाई है मुस्तफा (स0)
भूकि रहूंगी प्यास का सदमा सहूंगी में
इस लाल को शहीद नहीं होने दूंगी में

ज़ैनब (रज़ी०) के दो थे लखते जिगर जाने मुर्तजा (रज़ी०)
जाफर (रज़ी०) था नाम एक का और ऊन (रज़ी०) एक का

मां से रज़ा जो मांगी तो मादर ने यूं कहा
जल्दी से अपने मामूं पे तुम जाके हो फ़िदा

मुंह फेर के लईनों से आओगे जीते जी
महशर में मुंह न देखूंगी न बख्शूंगी दूध भी

मां के क़दम को चूम के दोनों ने यूं कहा
मामूं के हम गुलाम हैं ऐ जाने मुर्तजा (रज़ी०)

मुंह फेर जालिमों से प्यासे न आऐंगे
अब जीते जी अली (रज़ी०) के नवासे न आऐंगे

फिर आए पास शाह के वो दोनों नाज़नीन
रुखसत ली रण की अर्ज़ किया या इमामे दीं

तुम फातिमा (रज़ी०) के लाल हो सब्ते रसूल हो
मामूं दुआ करो के शहादत क़ुबूल हो

बरहम किया जो लश्करे ज़ालिम को फिर वहां
चारों तरफ से कहते थे कुफ्फार अल अमां

छलनी था तीरों से अली अकबर का तन सभी
बरछी सितम की सीने में एक और भी लगी

दिल पारा पारा हो गया टुकड़े हुआ जिगर
गश खाके लाल बानो का आया ज़मीन पर

जब नूर दीदा शाहे दो आलम का गुम हुआ
शब्बीर (रज़ी०) ढूंढने लगे जंगल में जा बजा

कहते थे मेरे यूसुफ़ सानी किधर हो तुम
आवाज़ दो हुसैन (रज़ी०) के जानी किधर हो तुम

सूरत नज़र न आई मुझे आज सुबह से
गम ख़्वार हाए क्या हुए बेकस हुसैन (रज़ी०) के

इतने में एक सिम्त को अकबर (रज़ी०) नज़र पड़ा
ज़ख्मी था और प्यास थी आलम था नज़ा का

छाती लगा पिसर से ये फरमाया दिल फिगार
सोना ये जलते दश्त का हम को है नागवार

अकबर (रज़ी०) ने रो रो अर्ज़ किया गम न कीजिए
अम्मां को जाके ख़ेमे में तिसकीन दीजिए

इतने में रूहे पाक हुई खुल्द को रवां
ले आए लाशा ख़ेमे में सुलताने दो जहां

अकबर (रज़ी०) का गम हुसैन के ख़ेमे में जब हुआ
लर्ज़ा था आसमां को ज़मीं को था ज़लज़ला

बे दूध गुज़रे असगर (रज़ी०) नादान को तीन दिन
रोते थे उसको देख के सुलताने इन्स व जिन

फरमाया उसको गोद में ले शह ने तिशना काम
शायद के रहम खाएँगे बच्चे पे अहले शाम

मां ने कहा छुपाईए दामन में शाहे दीं
अकबर (रज़ी०) की तरह इसको न खो आइए कहीं

बोली सकीना (रज़ी०) बाबा उसे जल्द लाइये
असगर (रज़ी०) का झूठा पानी मुझे ला पिलाइये

दरिया पे पहुंचा फातिमा (रज़ी०) ज़हरा का लाल जब
गोदी में लिपटा असगर (रज़ी०) नादान तिशना लब

मारा वोह शीर ख्वार को एक तीरे बर्मला
असगर(रज़ी०) का हलक छिद गया बाज़ू हुसैन(रज़ी०) का

क्या दिल था तीन दिन के प्यासे का दोस्तो
क्या सब्र था नबी (स०) के नवासे का दोस्तो

हम आसियों के वास्ते क्या क्या सितम सहा
कब्ज़े में दो जहां थे पे शह ने न कुछ कहा

मां बाप सद्का कर दो बस ऐसे शफीक पर
गम में हुसैन के रहो दिन रात चश्मे तर

दुर्रे यतीम ज़हरा (रज़ी०) का तन्हा जो रह गया
हसरत से आसमां की तरफ देख रो दिया

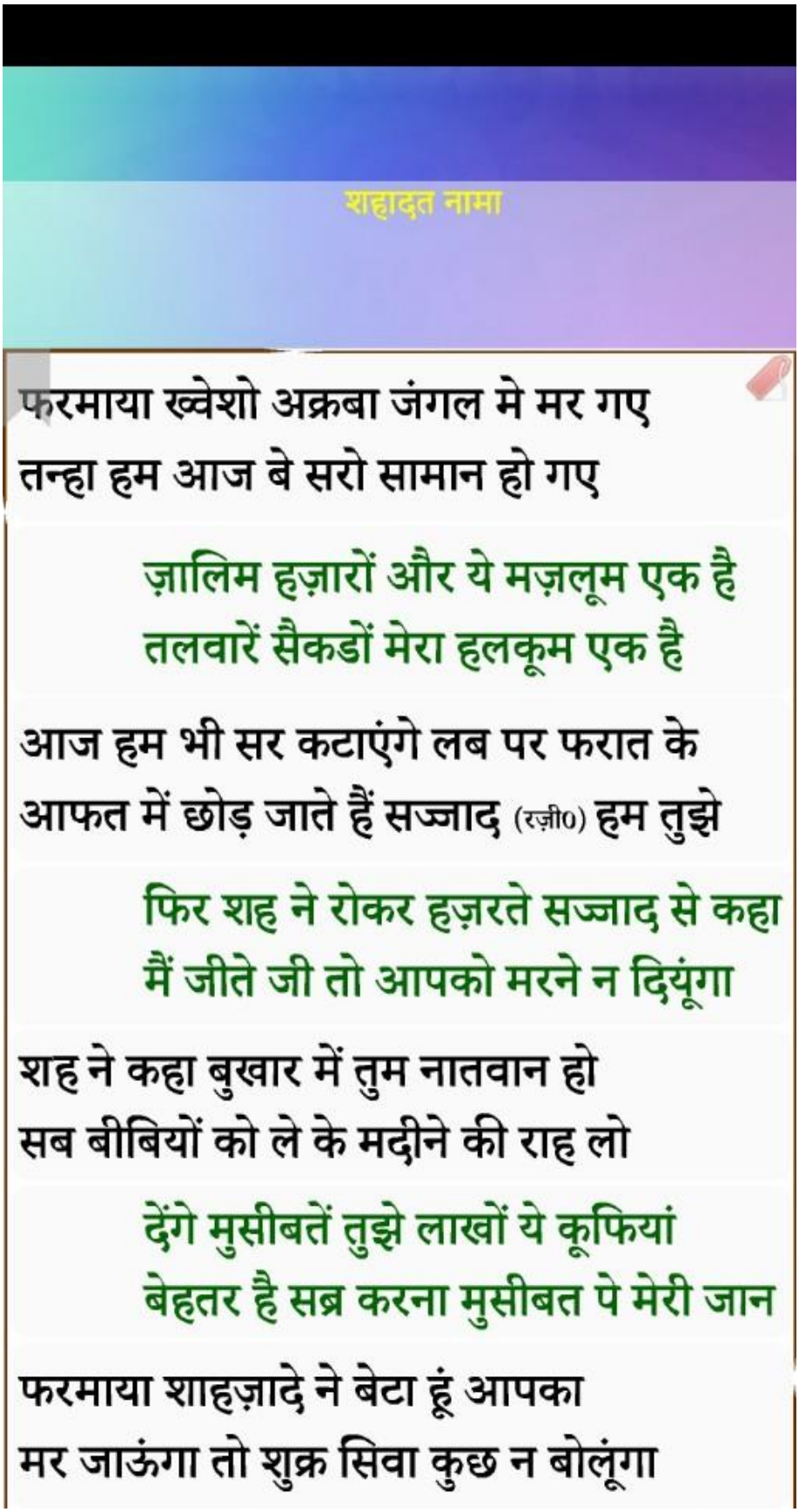
शहादत नामा
फरमाया ख्वेशो अक्रबा जंगल मे मर गए
तन्हा हम आज बे सरो सामान हो गए
ज़ालिम हज़ारों और ये मज़लूम एक है
तलवारें सैकडों मेरा हलकूम एक है
आज हम भी सर कटाएंगे लब पर फरात के
आफत में छोड़ जाते हैं सज्जाद (रज़ी0) हम तुझे
फिर शह ने रोकर हज़रते सज्जाद से कहा
मैं जीते जी तो आपको मरने न दियूंगा
शह ने कहा बुखार में तुम नातवान हो
सब बीबियों को ले के मदीने की राह लो
देंगे मुसीबतें तुझे लाखों ये कूफियां
बेहतर है सब्र करना मुसीबत पे मेरी जान
फरमाया शाहज़ादे ने बेटा हूं आपका
मर जाऊंगा तो शुक्र सिवा कुछ न बोलूंगा

रुखसत हरम से जब हुआ मज़लूमे करबला
सब बीबियों में हश्र नमूदार हो गया

ज़ैनब (रज़ी०) को आखरी किया शाह ने जब सलाम
हामशीरा ने गले से लिपट कर किया कलाम

सब जानते हैं बेटी मैं बिनते नबी (स०) की हूं
क़हरे खुदा ज़मीं पे इसी दम अयां करूं

सैफी मेरी ज़बान पे नादे अली (रज़ी०) की है
क्या बद्दुआ करूं मुझे खातिर नबी (स०) की है

ए लख्ते दिल रसूल (स०) के ज़ोहरा (रज़ी०) के नूरे ऐन
सौंपी खुदा को जाओ सुधारो मेरे हुसैन (रज़ी०)

बानो को बेकरारी थी उस वक्त इस क़दर
बे आब जैसे माही तड़पती है खाक पर

एक गमज़दा का हाल मैं लिखता हूं मोमिनां
पत्थर के भी जिगर से लहू सुनके हो रवां

रुखसत हो सब से शाह चले रण को जिस घड़ी
दामन पकड़ के बीबी सकीना (रज़ी०) चिमट गई

बातें थीं भोली भाली बरस चार का था सिन
गोदी में खेलती थी शहे दीं के रात दिन

बोली पिदर से में तुम्हें जाने न दियूंगी
ऐसे प्यारे सर को कटाने ना दूंगी

मरने में क्या मज़ा है जो जाते हो बाबा जान
मुझको यतीम बोलेंगी यसरब की लड़कियां

बहनोई भाई और चचा जान मर गए
तुम को खुशी है मरने की बतलाओ किस लिए

गोदी में ले सकीना (रज़ी०) को फरमाया दिल फिगार
उम्मत गुनेहगार नबी (स०) की है बेशुमार

जब तुम यतीम होगी कटेगा हमारा सर
ये सारी बख्शी जाएगी बे ख़ौफ व बे खतर

उम्मत का नाम सुनके सकीना (रज़ी०) ये कह उठी
तुमसे भी मुझको प्यारी है उम्मत रसूल (स०) की

इस में रज़ा नबी (स०) की है तो सर कटाइये
बाबा खुशी से कहती हूं अब रण को जाइये

अलकिस्सा क़त्ल गाह में आया वो शह सवार
फरमाया यूं लइनों से ए क़ौमे नाबकार

तुम मुझको जानते हो नवासा नबी (स०) का हूं
ज़हरा (रज़ी०) का नूरे ऐन हूं बेटा अली (रज़ी०) का हूं

सय्यद का क़त्ल ज़ालिमो जायज़ हुआ नहीं
अच्छा नहीं तुम्हारे लिए ये भला नहीं

उक़बा ख़राब होवेगी दुनिया न पाओगे
मुझसे अगर लड़ोगे जहन्नुम में जाओगे

कहना न माने सय्यदे आलम का वो शकी
बरसाई चारों सिम्त से बौछार तीरों की

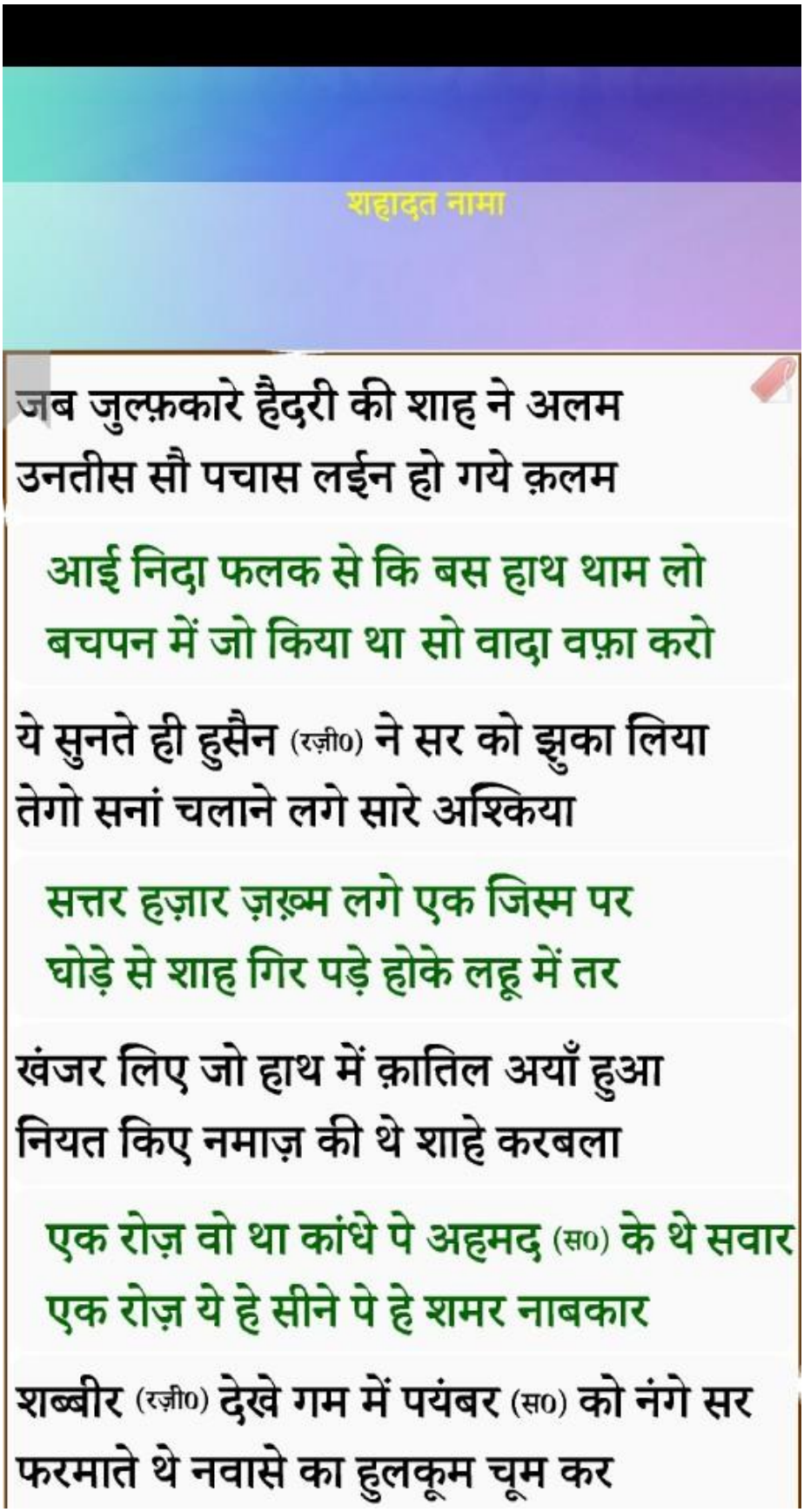
शहादत नामा
जब जुल्फ़कारे हैदरी की शाह ने अलम
उनतीस सौ पचास लईन हो गये क़लम
आई निदा फलक से कि बस हाथ थाम लो
बचपन में जो किया था सो वादा वफ़ा करो
ये सुनते ही हुसैन (रज़ी0) ने सर को झुका लिया
तेगो सनां चलाने लगे सारे अश्किया
सत्तर हज़ार ज़ख़्म लगे एक जिस्म पर
घोड़े से शाह गिर पड़े होके लहू में तर
खंजर लिए जो हाथ में क़ातिल अयाँ हुआ
नियत किए नमाज़ की थे शाहे करबला
एक रोज़ वो था कांधे पे अहमद (स0) के थे सवार
एक रोज़ ये हे सीने पे हे शमर नाबकार
शब्बीर (रज़ी0) देखे गम में पयंबर (स0) को नंगे सर
फरमाते थे नवासे का हुलकूम चूम कर

शहादत नामा
उम्मत रिहाई पाई है क़ैदे गुनाह से
ऐ लाल सर कटा दे मैं कुर्बान हलक़ के
गिरयां हसन (रज़ी०) खड़े थे परेशान मुस्तफा (स०)
बालों में खाक डालती थीं बीबी फातिमा (रज़ी०)
तकबीर में हुसैन (रज़ी०) का काटा लईं ने सर
सुब्हान रब्बी आला था शह की ज़बान पर
अंधेरा था ज़मींन पे कयामत हुई बपा
हूरो मलक पुकारते थे वा मुहम्मदा (स०)
अहले हरम के रोने का क्या माजरा लिखूं
ताक़त ज़बां में न रही आह क्या करूं
महशर के रोज़ उसको बस आराम व चैन है
अब दस्त गीर जिसका वसीला हुसैन (रज़ी०) है
जब सद्क दिल से मोमिनो ये माजरा सुनो
आले नबी के नाम पे बस फातिहा पढ़ो